नियति बदलाव नहीं, चुनाव की बात है। इसके लिए इंतजार नहीं किया जा सकता, इसे हासिल करना होता है।

- विलियम ब्रायन, अमेरिकी राजनयिक

अच्छी सोच

पाए ज्ञान को जीने में ही आनंद की अनुभूति

हम सभी उस परम सत्ता, चैतन्य सत्ता के कर्ता कारण हैं। सभी उस परम की ऊर्जा शक्ति से संचालित हैं। वे जानते हैं कि तुम क्या हो, भली-भांति जानते हैं कि तुम कितने पावर के बल्ब हो, तो उसी हिसाब से, उतना ही तुम्हें प्रदान करते हैं, जितना तुम्हारे शरीर यंत्र के लिए ठीक है, अपेक्षित है। अपने शरीर की शुद्धि कर, उसे संतुलित कर, उत्थान कर उसकी क्षमता बढ़ानी होती है। यदि ज्यादा ऊर्जा का प्रवाह परम स्रोत से आकर्षित करना या खींचना है तो अपना शरीर ट्यून किए बगैर बाह्य उपकरणों, उपायों या तकनीकों से परम ऊर्जा, पवित्र ऊर्जा खींचने का प्रयत्न किसी के लिए भी विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।

प्रणाम मीना ऊं
प्रणाम फाउंडेशन, नोएडा

इसलिए अपना ज्ञान-विज्ञान ही ठीक है, जो तुम्हारी क्षमतानुसार ही कार्य कर पाता है, इसे ही वैज्ञानिक चिकित्सा कहा जाता है। किंतु आत्मिक चिकित्सा या हीलिंग के नाम पर जो खेल चल रहा है वो भ्रमित करने वाला ही है, क्योंकि सच्ची हीलिंग को पूर्णतया जाने बिना कोई भी उसके साथ न्याय नहीं कर सकता। वो तो पूर्णतया शुद्ध-बुद्ध-पवित्र परम स्रोत से स्वतः प्राप्त ऊर्जा का प्रवाह है, जो प्रकृति का ही चुनाव होता है और उसी मानव में प्रवाहित होता है, जो शुद्ध-बुद्ध-पवित्र हो। यह परम सत्य है। साईबाबा वाला सत्य और उनके जैसे अन्य महामानवों का सत्य।

इसलिए अपने को जानें। व्यक्ति खुद को कैसे जानेगा? वह तो तभी जान पाएगा, जब यह समझेगा कि जानने योग्य क्या है। यही आंतरिक यात्रा का आरंभ है। अस्तित्व के सत्य का ज्ञान। यही जानने योग्य है, इसी हेतु मानव जन्म पाया है। इसी को जानने पर जान पाएंगे कि इस धरती पर तुम्हारा ध्येय क्या है। इस सृष्टि को तुम्हारा योगदान क्या है? सीखे, पढ़े हुए ज्ञान का ज्ञान भी तो जानना होगा। पाए ज्ञान को जीकर अनुभव से उसका सार तत्व जानना उसका ज्ञान पा लेना ही ज्ञान को जानना है। उस परम दृष्टा उस परम जानकार को जानना अपने पूर्ण पुरुषार्थ से।

यह तभी संभव है जब मानव प्रकृति प्रदत्त अपनी सभी क्षमताओं का विकास कर उनका पूर्ण उपयोग सत्य की दिशा में सत्य मार्ग पर चलकर ही सत्य को जानें। इसे जानने पर ही सारे रहस्यों का सत्य उजागर होता है। उसे जानकर ही आनंदानुभूति का मार्ग निकल पाता है।

प्रेरणा • मां में सुनने की क्षमता बच्चों के विकास के लिए महत्वपूर्ण, जो सुनना चाहिए वह सुनने की कोशिश करें

सही सुनने से बदल सकता है जीवन

उज्ज्वल पाटनी
मोटिवेशनल स्पीकर और 'पॉवर थिंकिंग' सहित छह किताबों के लेखक

बोलने वाला जो बोल रहा होता है, हम उससे आगे की सुनने की कोशिश करते हैं। ऐसा धैर्य की कमी से होता है। कभी-कभी खुद को ज्यादा बुद्धिमान या दूसरे को कम बुद्धिमान समझने से भी ऐसा होता है।

आप स्वयं को सबसे अच्छा उपहार देना चाहें, तो वह यह है कि अपने को सुनने योग्य बनाएं। दुनिया में कोई भी आदमी सुनकर ही बड़ा हो सकता है। किसी को भी समझने के लिए उसे सुनना पड़ेगा।

एक बार दो दोस्त एक बड़े-से पार्क के निकट से पैदल जा रहे थे। पार्क शहर के मध्य में स्थित सबसे व्यस्त सड़क से लगा था और वाहनों का काफी शोर था। तब उनमें से एक दोस्त ने दूसरे कहा, 'सुनो, उस झाड़ी में कोई झिंगुर आवाज कर रहा है।' दूसरा दोस्त चकित रह गया, 'तुम्हें इस शोर में झिंगुर की आवाज सुनाई दे रही है?' उसका दोस्त जीवविज्ञान का विद्यार्थी था। उसने हवा में सिक्का उछाला और जैसे ही सिक्का गिरा सड़क पर चलने वाले कई लोगों ने घूमकर देखा। जीवविज्ञान के विद्यार्थी ने कहा, 'हम जो सुनना चाहते हैं, वही हमें सुनाई देता है!'

आज दुनिया में सबसे ज्यादा कमी सुनने वालों की है। हम सबको लगता है कि हम अच्छे श्रोता हैं। अपने कार्यक्रमों में मैं लोगों से कहता हूं कि किन्हीं पांच लोगों से हाथ मिलाकर परिचय प्राप्त कीजिए। जब वे लौटकर आते हैं, तो मैं उनसे पांचों का परिचय पूछता हूं। अधिकांश लोग दो या तीन व्यक्तियों का परिचय ही बता पाते हैं। कितनी ही बार ऐसा होता है कि आपने किसी से हाथ मिलाया और एक-दूसरे को परिचय दिया। परंतु कुछ ही देर बाद आपसे कोई पूछे कि आप जिनसे हाथ मिला रहे थे वे कौन हैं ? आप उनके बारे में बताने में खुद को असमर्थ पाते हैं। हमारे स्कूलों में सुनने का औपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिलता। वहां हमें पढ़ने, लिखने अथवा बोलने का प्रशिक्षण मिलता है। इनकी परीक्षा तो होती हैं, पर सुनने की परीक्षा नहीं होती और ठीक से सुनने की आदत विकसित नहीं हो पाती। इसीलिए हर तरफ न सुनने की समस्या है। पति कहते हैं कि पत्नी नहीं सुनती, पत्नी कहती है कि पति नहीं सुनते। पिता कहते हैं कि बेटा नहीं सुनता, बेटा कहता है कि पिता नहीं सुनते। शिक्षक कहते हैं कि विद्यार्थी नहीं सुनते, ये सब सुनेंगे कैसे? सुनने का कोई औपचारिक प्रशिक्षण जब कभी मिला ही नहीं। सुनने के कई प्रकार होते हैं जैसे सुनने का बहाना करना यानी प्रिटेंटिव लिसनिंग, बोलने से ज्यादा आगे की सुनना अर्थात फ्यूचर लिसनिंग। फिर आता है पूर्वग्रह के साथ सुनना मतलब प्रेजुडिस्ड लिसनिंग और प्रतिक्रिया देने के लिए सुनना यानी रिएक्टिव लिसनिंग।

हम जब सुनने का बहाना करते हैं तो हम ऐसा प्रदर्शित करते है कि हम कहने वाले की बात सुन रहे हैं, किंतु हमारा ध्यान कहीं और होता है। बोलने से आगे की सुनने का अर्थ यह है कि बोलने वाला जो बोल रहा होता है, हम उससे आगे की सुनने की कोशिश करते हैं। ऐसा धैर्य की कमी की वजह से भी

होता है। कभी-कभी खुद को ज्यादा बुद्धिमान या दूसरे को कम बुद्धिमान समझने की वजह से भी ऐसा होता है।

सुनने में पूर्वग्रह तब आ जाता है जब हम सुनने से पहले ही बोलने वाले के प्रति धारणा बना चुके होते है, कि वह क्या बोलेगा। उसकी पूरी बात सुने बिना मन ही मन उसे दोषी या निर्दोष मान लेते है, जबकि उसने अपनी बात भी पूरी नहीं की है। कई बार ऐसा होता है कि हम प्रतिक्रिया देने के लिए ही सुनने हैं। बोलने वाला क्या बोल रहा है, उससे सुनने वाले को मतलब नहीं होता। उसके बोलते-बोलते ही हम उसका जवाब तैयार करने लग जाते हैं। हमारे दिमाग का एक हिस्सा उसकी पूरी बात सुनने की बजाय अपना जवाब ड्रॉफ्ट करने लग जाता है, इसलिए हम कभी पूरी बात नहीं सुनते। सुनते कम हैं और प्रतिक्रिया ज्यादा देते हैं। आज यदि आप अपने आपको कोई सबसे अच्छा उपहार देना चाहे, तो वह यह है कि अपने को सुनने योग्य बनाएं। दुनिया में कोई भी आदमी सुनकर ही बड़ा हो सकता है। दुनिया में किसी को भी समझने के लिए सिर्फ उसे सुनना पड़ेगा। यदि आपके भीतर सुनने की क्षमता नहीं है, तो आपके अंदर दूसरी कोई भी क्षमता उभरकर नहीं आ सकती। जब तक आप सुनेंगे नहीं, जब तक आप समझेंगे नहीं, तब तक आप उस काम को नहीं कर सकते।

कोलकाता के वैदिक विलेज में एक आवासीय ट्रैनिंग प्रोग्राम में मैंने संगीत की धुन सुनाई। उस धुन में बहुत सारी आवाजें मिली हुई थीं। जानवरों की आवाज थी, रेलगाड़ी की आवाज थी, आंधी, तूफान, बारिश आदि ऐसी बहुत सारी आवाजों को एक साथ मिलाया गया था। यह धुन पहले सबको सुनाई गई और उनसे आवाजें पहचानने को कहा गया। अधिकतम लोगों ने सात-आठ आवाजों की पहचान की। उसके बाद सुनने की कला के बारे में बहुत सारी बातें बताई गईं, और अगली सुबह फिर वही धुन सुनाई गई। अबकी बार उसी धुन के टुकड़े में से 17-18 आवाजों को लोगों ने पहचान लिया। तीसरी बार आप आश्चर्य करेंगे कि लोगों ने उसी धुन के टुकड़े में से 25 से 27 आवाजों की पहचान कर ली। सिर्फ तीन-चार बार के प्रशिक्षण और प्रेरित किए जाने पर लोगों ने सुनने व पहचानने की क्षमता को 300 से 400 प्रतिशत बढ़ा दिया। सोचिए, जीवन में क्या होता होगा? कितनी बार आपके आस-पास के लोग आपको बहुत कुछ अच्छा बताना चाहते होंगे, लेकिन सुनने की क्षमता विकसित न होने के कारण आप उस पर ध्यान नहीं दे पाते होंगे। जब भी किसी की कोई बात सुनें, पूरी तरह धीरज के साथ सुने। न सामने वाले के शब्दों के आगे जाएं और न उसके कहे शब्दों के पहले रुकें। कभी-कभी आपका ज्यादा ज्ञानी होना भी सुनने की क्षमता प्रभावित कर देता है। आप दूसरों का मूल्यांकन करने में लग जाते है। किसी कंपनी में भी वातावरण अच्छा बनाए रखने के लिए सुनने की क्षमता जरूरी है। इसके अभाव में अविश्वास, उदासीनता और आशंका पैदा हो सकती है। जहां कर्मचारियों को सुना जाता है वहां आत्मविश्वास बढ़ता है और उसके साथ उत्पादकता व मुनाफा भी।

सबसे पहले खुद में सुनने की इच्छा पैदा करें। जब आप जिज्ञासा के साथ सुनते हैं तो आप ऐसी बातें सुनते हैं कि सुनने की ललक बढ़ती जाती है। फिर 70-30 का नियम अपनाएं। जिसे आप सुन रहे हैं उसे 70 फीसदी मौका दें और खुद 30 फीसदी बातचीत ही करें। कई बार सुनते-सुनते कुछ बताने का लालच पैदा हो जाता है। हम बीच में हस्तक्षेप कर बातचीत खत्म कर देते हैं। इस लोभ से बचें। उसकी बॉडी लैंग्वेज भी समझने की कोशिश करें।

एक वकील महिला की बेटी को बोलने में दिक्कत थी। उसने थैरेपिस्ट से अपॉइंटमेंट लेने के लिए फोन किया और 10 मिनट नॉनस्टाप अपनी बेटी की दिक्कत के बारे में बोलती रही। थैरेपिस्ट को दिक्कत समझ में आ गई। उसने कहा कल आप बेटी से बात करें तो उसे गौर से सुने, प्रश्न पूछें, रुचि दिखाएं। फिर हम बात करेंगे। अगली सुबह ही उसका फोन आया कि बेटी से इतना अच्छा संवाद कभी नहीं हुआ। जाहिर है मां अपनी बेटी को बोलने का मौका नहीं दे रही थी। मां में सुनने की क्षमता न होने से बच्चे का व्यक्तित्व कुंठित होकर उसे जीवन में नाकाम भी बना सकता है।

खुशी के रंग

बच्चे और खिलौने एक-दूसरे के बिना अधूरे होते हैं, क्योंकि बच्चों को सबसे ज्यादा खुशी उन्हीं से मिलती है। गाजा शहर के इन बच्चों के लिए उनके अंकल ने उपयोग की हुई लकड़ियों से पहिये जोड़कर ये गाड़ी बनाई है। वह मिलते ही बच्चे खुशी से झूम उठे और उसे चलाने निकल पड़े। बच्चों की इस मुस्कुराहट के मायने हैं, क्योंकि इनके पास खेलने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है। खिलौने तो ठीक, इनके घर और स्कूल तक दुरुस्त नहीं हैं। इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष के कारण इन जैसे बच्चों के चेहरों पर मुस्कुराहट मुश्किल से ही आ पाती है।

तो ये करें...

जब संकोची स्वभाव प्रगति में रोड़ा बन जाए

जहां कुछ गलत करने से अपराध बोध पैदा होता है वहीं, संकोची या शर्मिला स्वभाव इस अहसास से पैदा होता है कि हमारे भीतर कोई बुनियादी खामी या अभाव है। हम सार्वजनिक रूप से लोगों से बचना चाहें, ध्यान आकर्षण से बचें तो यह संकोची स्वभाव होने का संकेत है।

विज़न बोर्ड के जरिये खुद का दृष्टिकोण बदलें

1. यह साधारण बोर्ड होता है, जिस पर हम अपने लक्ष्य, भविष्य में हम क्या और कैसे व्यक्ति बनना चाहते हैं, इससे संबंधित चित्र, सूक्तियां या कोट लिखे होते हैं। दिन में जितनी बार हम इसे देखेंगे, उतना यह मन पर छाप छोड़ता है।

2. हम खुद को किस रूप में देखना चाहते हैं, इसकी मन में स्पष्ट छवि बनाएं। ध्यान के दौरान ऐसा करेंगे तो फायदा होगा। इससे हमारे विचार व कर्म में एकरूपता आती जाएगी व संकोच खत्म होगा।
3. चूंकि यह अपराध बोध से मिलती-जुलती भावना है, अतः यहां भी खुद के प्रति करुणामय दृष्टिकोण रखने से फायदा होगा। हमें स्वीकार करना होगा कि दुनिया में कोई पूर्ण नहीं है।

'काश मैं ऐसा होता' को मन के भीतर से हटाएं

1. हम मन ही मन कहते हैं काश! मैं भी उसके जैसा बोल्ड होता, काश मैं भी उतना बुद्धिमान होता आदि। इसकी बजाय कहें, 'अब आगे से मैं भी वैसा बनूंगा, उतनी ही बुद्धिमानी दिखाऊंगा।'

2. दाएं हाथ की तर्जनी से बाएं हाथ की बीच की उंगली को धीरे-धीरे थपथपाए और कहें, 'मैं अपने आप को जैसा हूं, वैसा स्वीकार करता हूं। मेरे भीतर के गुण धीरे-धीरे विकसित हो रहे हैं।' कुछ दिनों बाद सिर्फ थपथपाना ही काफी होगा और मस्तिष्क में सकारात्मक तरंगे उठने लगेंगी।
3. हम यह तकनीक पूरे शरीर पर अपना सकते हैं। भौहों के नीचे हड्डी वाले भाग से लेकर पैरों की उंगलियों तक।

अपने बचपन पर गौर करें और कारण को समझें

1. जन्म के बाद हमें संभालने वाले माता-पिता की मुस्कान, प्यारभरा स्पर्श, प्यारभरी आवाजें, कोमल स्पर्श आदि से अपने बारे में अच्छे होने की धारणा बनती है। किसी वजह से बचपन में इनका अभाव हो तो खुद में कोई खामी होने का अहसास होता है।

अपने बचपन में जाकर कारण समझें।
2. अपने जीवन-मूल्य तय करें, जिनके मुताबिक आप जीना चाहते हैं। ईमानदारी, करुणा आदि। इन मूल्यों के मुताबिक जीने से स्वाभिमान पैदा होगा और संकोच खत्म होगा।
3. हर व्यक्ति में विशेषताएं होती हैं। उन पर गौर करें। भूतकाल में उनसे मिली उपलब्धियां या सुखद क्षणों को याद करें।

द न्यूयॉर्क टाइम्स से

स्पोर्ट्स बेटिंग में अरबों डॉलर लगाकर बर्बाद हो रहे हैं अमेरिकी युवा

मैनहटन की फिफ्थ एवेन्यू स्ट्रीट, 224 नंबर इमारत का छोटा-सा दरवाजा। वहां एक कार आकर रुकती है। उसमें से एक व्यक्ति (मि. गोल्ड) उतरकर बाहर सामान्य कपड़े वाली महिला को 3 लाख 50 हजार डॉलर से भरा बैग देता है। यह पैसा ऑनलाइन बेटिंग रिंग का है। यह केवल मैनहटन का उदाहरण है। अमेरिका के कई शहरों में यह अवैध रूप से जारी है। यह स्पोर्ट्स बेटिंग है। बेसबॉल, फुटबॉल, गोल्फ, मार्शल आर्ट्स जैसे खेल इसकी गिरफ्त में हैं। पूरा कारोबार ऑनलाइन होता है, जबकि राशि का लेन-देन नगद। करोड़ों रुपए इधर से उधर किए जाते हैं। इसे अमेरिका का काला सच कह सकते हैं। पनामा की वेबसाइट 'बेटऑनलाइन' पर यह चलता है। आईटी के दिग्गज और खुफिया एजेंसियों के विशेषज्ञ, वे इसे रोक नहीं पा रहे हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स के रिपोर्टरों की टीम ने यह खुलासा किया है, जानिए-

• वॉल्ट बोदानिक, जेम्स ग्लेन्ज और आगस्टिन आर्मेन्ड्रिज, इन्वेस्टीगेटिव रिपोर्टर

2012 के जून का महीना दो कारणों से असामान्य है और ध्यान में रखने वाला है। इंटरनेट से चलने वाले बेटिंग कारोबार के दो करोड़ 31 लाख रुपए से भरा बैग जो महिला लेती है, वह सामान्य नहीं है। वह न्यूयॉर्क रियल एस्टेट डेवलपर है, जिसका नाम जॉय टॉमचिन है। वह समलैंगिक अधिकारों के समूह की बड़ी कार्यकर्ता है। वह करोड़ों रुपए राजनीतिक उम्मीदवारों को दान कर चुकी है। पिछले महीने उसी महिला ने 3 लाख 35 हजार डॉलर से भरा बैग दूसरे व्यक्ति से लिया है। इन दोनों केस के बारे में टॉमचिन कहती हैं- मैंने यह राशि अपने भाई की तरफ से ली है। जबकि अभियोजन पक्ष कह चुका है कि इस राशि से ऑनलाइन स्पोर्ट्स बेटिंग की जा रही है। इसमें ऐसे लोग भी जुड़ चुके हैं, जो पहले कुछ और काम करते थे। कानून से जुड़े लोग उन तक नहीं पहुंच पा रहे हैं।

आश्चर्यचनक यह है कि ये खेल काल्पनिक होते हैं, जिनमें टीम चयन का काम काम वेबसाइट चलाने वाले करते हैं। दावे किए जाते हैं कि कोई भी इन्हें खेलकर मिलियन डॉलर राशि जीत सकता है। प्रतिदिन इसमें प्रतियोगिताएं होती हैं और लाखों डॉलर के ईनाम निकाले जाते हैं। वर्ष 2006 में अमेरिकी संसद के निचले सदन कांग्रेस ने कोशिश की थी इसे रोकने की। इसमें अभियोजन पक्ष से कहा गया था कि वह इस आपराधिक चक्र को कैसे भी तोड़ें। तब एक कानून भी पारित किया गया था।

आधी रात को इंटरनेट पर शुरू होने वाला यह 'खेल' अनियंत्रित हो गया है। इससे कॉलेजों और पेशेवर खेलों की साख को चोट पहुंच रही है। इसे बरकरार रखने के लिए ऑनलाइन स्पोर्ट्स बेटिंग रोकनी होगा। न्यूयॉर्क टाइम्स ने अपनी जांच में पाया है कि तब से अब तक अभियोजन या एफबीआई या पुलिस ने इसे रोकने के लिए जो भी हथकंडे अपनाए हैं, वे नाकाफी साबित हुए हैं। कानून इसे इसलिए नहीं रोक पा रहा है, क्योंकि यह अवैध कारोबार केवल ऑनलाइन भुगतान पर नहीं टिका है। उसका अपना पुराना बैंकिंग सिस्टम है, जिसमें लाखों डॉलर पेपर बैग, कार, छोटे ट्रक, कैसिनो चिप और मनीलॉन्ड्रिंग के अन्य माध्यमों से पहुंचाए जा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर कॉलेज में पढ़ने वाले जूनियर छात्र ब्रायस मौरो को लीजिए। वह शान से कहता है कि उसने काल्पनिक खेलों में बेटिंग करके छह अंकों में राशि जीती है। उसकी नजर में यह कानूनन सही है, जबकि अमेरिकी सरकार इसे गलत ठहराती है। वह कहता है, यह निवेश है। मेरा इसमें पोर्टफोलियो भी है। मैं उसे बदलता रहता हूं, ताकि नए प्लेयर जोड़ सकूं। वह स्वीकार करता है कि रोज कई घंटे उसे टीम बनाने में लग जाते हैं, इससे उसके स्कूल की पढ़ाई बुरी तरह प्रभावित होती है। स्पोर्ट्स बेटिंग की ऐसी लत के कारण हालात यह हैं कि अमेरिका का युवा वर्ग बुरी तरह इस रिंग में फंस चुका है।

अमेरिकी संसद के लिए भी यह बड़ी समस्या बन चुकी है कि वह इस हेराफेरी को कैसे रोके। आज बड़ी संख्या में युवा गैम्बलर बिना सोचे-समझे इंटरनेट के माध्यम से रोज हजारों डॉलर इस पर लगा रहे हैं। सरकारी जांचकर्ता तो यह भी पता नहीं लगा पा रहे हैं कि वेबसाइट चलाने वाले लोग कैसे जनता को आकर्षित करके उनका फायदा उठा रहे हैं। अमेरिका में कैसिनो और अन्य जगहों पर गैम्बलिंग को कानूनी मान्यता प्राप्त है। ऐसे में फिर पुरानी बहस छिड़ गई है कि स्पोर्ट्स बेटिंग को किस तरह मान्यता दी जाए। अगर नहीं, तो कौन से तरीके अपनाए जाएं, ताकि इसे रोका जा सके। माफिया कनेक्शन वाली कई गैम्बलिंग रिंग बंद कराकर अपराधियों को सजा दिलाने वाले क्वीन डिस्ट्रिक्ट के अटॉर्नी रिचर्ड ए. ब्राउन कहते हैं, मैं दावे के साथ यह कहता हूं कि जो एक बार इसमें भाग ले लेता है, उसे अक्सर धमकियां मिलती हैं और जान का खतरा बना रहता है। यही नहीं, इस तरीके से होने वाला लाभ दूसरे आपराधिक कार्यों के लिए नींव का काम करता है।

* गेम्बलिंग के खिलाफ बनी राष्ट्रीय परिषद के प्रमुख अधिकारी मि. व्हाइट कहते हैं- अवैध बेटिंग की दुनिया और काल्पनिक खेलों की बेटिंग आपस में मिल रही है। ऐसे में पहचानना मुश्किल है कि कौन कहां पैसा लगा रहा है। वे एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण बताते हैं, जिसने पिछले तीन महीने में 47 लाख रुपए गंवाए हैं।
* यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में गैम्बलिंग स्टडीज प्रोग्राम के को-डाइरेक्टर डॉ. टिमोथी डब्ल्यू. फॉन्ग कहते हैं- आम लोग काल्पनिक खेल को नहीं समझ पाते हैं। इसका एकमात्र कारण यह है कि वे इसे गैम्बलिंग नहीं मानते हैं।
* स्पोर्ट्स बिज़नेस जर्नल की स्टडी रिपोर्ट के अनुसार साल के शुरुआती छह महीनों में काल्पनिक खेलों के 91 प्रतिशत मुनाफे का केवल 1.3 हिस्सा ही प्लेयर्स को मिला है।
* सेंटर फॉर प्रॉब्लम गैम्बलर के डॉ. जेफ्री डेरेवेन्स्की कहते हैं- युवा गैम्बलर में लिमिट तय करने की क्षमता नहीं होती है। उन्हें इसके कारण गंभीर परेशानी से गुजरना पड़ता है। यही कारण है कि इंटरनेट युग में युवा पुरुष गंभीर स्थिति में हैं।

यह सही है कि अंधेरे में होने वाले एक कारोबार की यह काली सच्चाई है। इसमें ज्यादा शिकार युवा पुरुष बन रहे हैं, जो रात के अंधेरे में अरबपति बनने का ख्वाब तो देखते हैं, लेकिन ठोकर लगते ही गिर जाते हैं।

© The New York Times

मैनहटन की फिफ्थ एवेन्यू स्ट्रीट में काली टी-शर्ट पहना व्यक्ति मिस्टर गोल्ड है, जो स्पोर्ट्स बेटिंग से आए करोड़ों रुपए इधर से उधर करता है।

गेमिंग वेबसाइटों के दावे और उनकी सच्चाई

न्यूयॉर्क टाइम्स ने काल्पनिक खेलों में स्पोर्ट्स बेटिंग के खिलाफ अभियान चलाया। इसमें नियामकों, अभियोजकों, गैम्बलरों और विशेषज्ञों के साक्षात्कार लिए गए। टीम ने अमेरिका और दूसरे देशों में स्थापित गैम्बलरों के डेटा सेंटरों से पता लगाया कि कैसे बाहरी वेबसाइटें अमेरिकी युवाओं को गिरफ्त में ले रही हैं। जानिए उनके दावे और सच्चाई-

कानून पर दावा : इस वेबसाइट को चलाने वाले दावे से कहते हैं- यह वेबसाइट उन क्षेत्रों के लिए है, जहां बेटिंग को कानूनी मान्यता प्राप्त है। इसमें अमेरिका बिल्कुल शामिल नहीं है।

सच्चाई : वेबसाइट के प्रमुख कर्ता-धर्ता ही इच्छुक लोगों के अकाउंट खुलवाते हैं। उनसे पहले डिपॉजिट मनी कराई जाती है, फिर भले ही पता न्यूज़र्सी के ऑरेगन का क्यों न हो।

ट्रांजेक्शन पर दावा: मोजरसेफ्टी ऑनलाइन वेबसाइट ट्रांजेक्शन की जानकारी देती है और आईडी भी जारी करती है। दिखने में यह जूते और हेलमेट बेचती है, जबकि असलियत कुछ और है।

सच्चाई : यह ऑनलाइन थर्ड पार्टी सेवा है, जो बेटिंग वेबसाइटों के लिए राशि के भुगतान में सहयोग करती है। यह जानकारी फोन पर बात करने वाली एना रिचर्डसन नाम की महिला ने दी है।

कार्यक्षेत्र पर दावा : बेटऑनलाइन वेबसाइट का दावा है कि वह अपना कामकाज बाहर ही करती है। उसका कार्य क्षेत्र अमेरिका बिल्कुल नहीं है। इसे बाहर से ही संचालित किया जाता है।

सच्चाई : भारी संख्या में अमेरिकी यूज़र सोन जोस और एशबर्न के सुरक्षित पोर्टलों के माध्यम से इससे जुड़े हैं। जब उस माध्यम से संपर्क किया गया, तो उसने बेटऑनलाइन को सेवा से हटा दिया।